



ISSN : 2278-8204

International Monthly Research Journal For All Subjects

AKSHARDEEP

■ Volume - II ■ Issue - V ■ November 2013

Editor
Ganpu Lahane

अनुग्रहगणिका

<p>1. Structural And Post-Structural Theory : Literature As A Special Use Of Language</p> <p>2. Principles Of Language Teaching</p> <p>3. Human Rights And Good Governance</p> <p>4. Essential Field Work Training In Development Of Professional Social Workers In India</p> <p>5. Problems Of Working Women</p> <p>6. "Harischandra Birajdar" A Wing Of Wrestling In Maharashtra State</p> <p>7. RFID : ABoon For Academic Libraries</p> <p>8. हिंदी विज्ञापन की क्षमताएँ और सीमाएँ</p> <p>9. जय प्रकाश कर्दम के साहित्य में दलित चेतना</p> <p>10. हिंदी साहित्य के दलित कविताओं में नारी</p> <p>11. बीसवीं सदी की प्रतिनिधि महिला लेखिकाओं की कहानियों में नारी संवेदना</p> <p>12. ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'सलाम' कहानी में दलित चेतना का स्वरूप</p> <p>13. 'बोहाडा' एक नृत्यनाट्य</p> <p>14. अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्याचा स्त्रीवादी दृष्टिकोनातून अभ्यास</p> <p>15. मुस्लिम मराठी कथा आणि समकालीन वास्तव</p> <p>16. बहुजनांची अस्सल अभिव्यक्ती 'लळित' आधुनिक रंगभूमिची जननी</p> <p>17. समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धती</p> <p>18. बी. रघुनाथ यांचे काढंबरी लेखन</p> <p>19. राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराजांची 'आदर्श ग्रामराज्याची कल्पना'</p> <p>20. खांडेकरांची गढी : धनगरमोहा</p> <p>21. मराठी दलित आत्मकथनातील प्रादेशिकता</p> <p>22. वर्गाध्यापन प्रक्रियेत अध्यापकांच्या वर्तन प्रक्रियाच्या संदर्भात अभ्यास</p> <p>23. ज्जेष्ठ स्वातंत्र्य सेनानी मा. गंगाप्रसादजी अग्रवाल यांचे सर्वोदय चळवळीतील योगदान</p> <p>24. इतर मागास जातीचे राजकारण (OBC)</p> <p>25. सीरिया प्रश्नावर अमेरिका एकाकी</p> <p>26. जागतिकीकरण काळातील भारतीय उच्चशिक्षण विशेष संदर्भ - ग्रामीण महाराष्ट्र</p> <p>27. छत्रपती संभाजी एक ज्वलंत व्यक्तिमत्त्व</p> <p>28. नांदेड जिल्ह्यातील सहकारी साखर कारखाने आणि ऊसतोडणी कामगार : एक अध्ययन</p>	<p>Prof. Chincholkar B. B. 01</p> <p>Prof. Ayodhya Jadhav 04</p> <p>Dr. Khandve E. T. 07</p> <p>Dr. Balasaheb G. Patil 13</p> <p>Dr. Ravi Dalawai 16</p> <p>Dr. Kalepawar Y. 19</p> <p>Asst. Prof. Patil A. C. 22</p> <p>Chavan Ravi 22</p> <p>डॉ. रामकृष्ण बदने 24</p> <p>प्रा. बी. आर. गायकवाड 27</p> <p>शिलाताई एकनाथ केजकर 30</p> <p>प्रा. राठोड राजकुमार भावरा 32</p> <p>प्रा. खाली मुख्तारोद्दिन खमरोद्दिन 35</p> <p>प्रा.डॉ.पठाण जलालखाँ चाँदखाँ 35</p> <p>प्रा. डॉ. शुत्रघ्न व्यंकटराव फड 38</p> <p>प्रा. डॉ. मनीषा नेसरकर 41</p> <p>प्रा. डॉ. मुतवल्ली मैजोदीन 45</p> <p>प्रा. अशोक केंद्रे 48</p> <p>प्रा. प्रकाश कारभारी शेवाळे 52</p> <p>प्रा. नारायण शिवशेटे 55</p> <p>डॉ. सूर्यप्रकाश जाधव 58</p> <p>प्रा. राजेश भालेराव 62</p> <p>प्रा. पद्माकर जाजनूरकर(पिट्ले) 65</p> <p>प्रा. सुशिल शेषेराव शिंदे 68</p> <p>प्रा. हिरास नागेश 70</p> <p>नामदेव अशोक पवार 74</p> <p>प्रा. डॉ. आंधळे बी. व्ही. 78</p> <p>प्रा. सोमवंशी एम. जी. 81</p> <p>प्रा. पाटील बस्वराज 84</p> <p>प्रा. कदम डी. के. 92</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

नांदेड जिल्ह्यातील सहकारी साखर कारखाने आणि ऊसतोडणी कामगार : एक अध्ययन

प्रा. डी. के. कदम

समाजशास्त्र विभाग प्रमुख
हुतात्मा जयवंतराव पाटील
महाविद्यालय, हिमायतनगर

प्रस्तावना (Introduction) : सहकारी प्रवृत्ती ही मानवाच्या आर्थिक, सामाजिक आणि सांस्कृतिक प्रगतीचा प्रमुख प्रेरणा आहे असे म्हटले जाते. अर्थशास्त्रात सहकारी संस्था हा एक व्यवसाय संघटनाचा प्रकार आहे; तर समाजशास्त्रात सहकार ही आंतरक्रियेचे एक रूप आणि ही एक सामाजिक प्रक्रिया आहे.

जगातील सर्वच राष्ट्रात सहकारी संस्था आहेत. सहकार संस्थाचा अनेक निर्धन व असहाय्य व्यक्तींना मिळत आहे. सहकार म्हणजे मानवाच्या अधिकतम कल्याणाच्या दृष्टीने स्वावलंबन व पारस्पारिक मदतीच्या तत्वावर आधारलेली अशी स्थिती की, जेथे सभासद स्वच्छेने आपल्या सर्वसामान्य उद्देशाच्या पूर्तीसाठी समतेच्या भावनेने एकत्र येतात. सहकारात ‘विना सहकार नाही उदार’ व एकमेकांना सहाय्य करून अवघे धरु सुपंथ या ब्रीद वाक्याखाली सर्वजन वावरतात. त्यामुळे सहकारात नफयापेक्षा सेवा व सभासदांच्या गरजांची पूर्तता करण्यास प्राधान्य दिले जाते.

सहकाराचा उगम हा औद्योगिक क्रांतीमुळे झाला आहे. आज सहकारी तत्वावरील संस्था, उद्योग, साखर कारखाने सर्वत्र आहे. सहकार तत्व हे आर्थिक विकासाचे नसून ती सामाजिक आणि उन्नतीचा राजमार्ग आहे. सहकारामुळे व्यक्तीमध्ये एकात्मता, बंधुभाव आणि समानता या मानवी मुल्यांची जोपासना होते. सहजीवनाच्या विकासाचा तो एक लोकशाही मार्ग समजण्यात येतो.

महाराष्ट्रात सहकारी तत्वावरील साखर कारखाने सर्वात जास्त आहेत. त्यामुळे कृषी औद्योगिक क्रांतीचा पाया सहकारी तत्वावरील साखर कारखानदारीने घातला. साखर उद्योगामुळे ग्रामीण समाजाचे आर्थिक परिवर्तन होऊन ग्रामीण भागाचे रूपच पालटले आहे. साखर उद्योगाने ग्रामीण भागातील लोकांना रोजगार उपलब्ध करून देण्यात फार मोठी कामगिरी बजावली आहे. साखर कारखान्यामुळे परिसरातील लोकांना रोजगार उपलब्ध करून दिला आहे. महाराष्ट्रात सर्वत्र सहकारी तत्वावरील साखर कारखाने आहेत. या साखर कारखान्यांनी विशेषत: ग्रामीण, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजकिय जवळ जवळ समाज जीवनाच्या सर्व क्षेत्रात प्रभावी भूमिका बजावली आहे. ग्रामीण भागातील मजुरांना हंगामात मजूरी मिळत होती, परंतु हंगाम संपला की, मजुरांना मजूरी मिळत नव्हती त्यामुळे मजुरांना उदरनिर्वाहासाठी इतरत्र मजूरीसाठी जावे लागते. परंतु साखर कारखान्यामुळे या मजुरांना त्या परिसरात काम मिळाले. साखर उद्योगात ऊसतोडणी कामगार म्हणून काम करून लागले. साखर उद्योगात ऊसतोडणी कामगारांची भूमिका अत्यंत महत्वाची आहे. नांदेड जिल्ह्यातील सर्व साखर कारखाने सहकारी तत्वावरील आहे. म्हणून प्ररतुत शोध निबंधात नांदेड जिल्ह्यातील सहकारी साखर कारखाने आणि ऊसतोडणी कामगार यांचा अभ्यास केला आहे.

अध्ययनाचे उद्देश (Objectives) :

- १) सहकाराची संकल्पना समजून घेणे.
- २) नांदेड जिल्ह्यातील सहकारी साखर कारखान्याचा अभ्यास करणे.
- ३) ऊसतोडणी कामगारांचा अभ्यास करणे.
- ४) सहकारातील दोष जाणून घेणे.

अध्ययन पद्धती (Methodology) : प्रस्तुत विषयाच्या अध्ययनासाठी माहिती मिळवतांना प्राथमिक तथ्य संकलन व द्वितीय संकलन पद्धतीचा अवलंब करण्यात आला आहे. प्राथमिक तथ्य संकलनात मुलाखत अनुसुचीचा निरीक्षणाचा वापर करण्यात आला, तर दुय्यम तथ्य संकलनासाठी वर्तमानपत्रे, मासिके, संबंधित ग्रंथ व ऐतिहासिक कागदपत्रे व इंटरनेटचा वापर माहिती मिळविण्यासाठी करण्यात आला आहे.

तथ्यांचे विश्लेषण (Data Analysis) :

सहकाराची संकल्पना : सहकाराचा या संकल्पनेचा उगम इंग्लंडमध्ये औद्योगिक क्रांतीच्य उत्तरार्धात असे मानले जात असले तरी मानवी सहकारी प्रवृत्ती प्राचीन व मुलभूत आहे. सहकाराची वृत्ती ही अन्य मानवी वृत्तीप्रमाणेच उपजत आहे. भारतातील कौटिल्याच्या अर्थशास्त्रातही सहकाराचे वर्णन करणारे अनेक विचार आहेत.

रॉबर्ट ओवेन यांना आधुनिक सहकार चळवळीचा जनक म्हणतात. न्यू लॅनार्क येथील गिरणीतील कामगारांची स्थिती सुधारण्यासाठी ही चळवळ उभारून न्यू हार्मनी कॉलनी सारखी वसाहत स्थापन केली. ब्रिटनमधील रॉरडेल येथील विणकरांनी एकत्र येऊन इ.स. १८४४ मध्ये सहकारी ग्राहक भांडाराची स्थापना केली. यानंतरच खन्या अर्थानी सहकाराला चालना मिळाली. सहकारामुळे सर्वांचा विकास होऊन वसुधैव कुटुंबकम चा उक्तीप्रमाणे सर्व जग हे कुटुंबप्रमाणे वर्तणूक करील आणि जगातील वैरभाव संपुष्टात येईल आणि सर्व मानव समाजाचे जीवन सुखी-समृद्ध होईल. म्हणून इ.स. १८८५ साली सर फ्रेडरिक निकोलने सहकारी पतपेढयांचा भारतात प्रथम पुरस्कार केला, त्यांच्या प्रयत्नामुळे इ.स. १९०२ साली सहकाराला कायदयाचे स्वरूप प्राप्त झाले. मार्च १९०४ साली संपूर्ण हिंदुस्थानात सहकार कायदा अंमलात आला व सहकार क्षेत्र सर्वत्र पसरले.

श्री वैकुंठलाल मेहता यांच्या मते सहकार म्हणजे 'समान आर्थिक उद्दिष्टे साध्य करण्यासाठी समान गरजा असणाऱ्या व्यक्तींनी ऐच्छिकरित्या स्थापन केलेली संघटना होय'.

डब्ल्यू.डी.वटकोन यांच्या मते सहकार म्हणजे एकात्मता, लोकशाही, समता व स्वातंत्र्य या तत्वांवर आधारलेली सामाजिक संघटना होय.

महाराष्ट्रात सहकारी साखर कारखानादारीने ग्रामीण भागाच्या विकासाची मुहूर्तमेढ रोवली. महाराष्ट्रात इ.स. १९४८ मध्ये सहकार महर्षी पद्मश्री विठ्ठलराव विखे पाटील व प्रसिद्ध अर्थतज्ज डॉ. धनंजयराव गाडगीळ यांनी सहकारी तत्वावर साखर कारखाना प्रवरानगर ता. श्रीरामपूर जि. अहमदनगर येथे स्थापन केला हा कारखाना सहकारी तत्वावरील साखर कारखाना देशातील नव्हे तर आशिया खंडातील पहिला साखर कारखाना ठरला. याचाच परिणाम की भारतातील सर्वाधिक सहकारी साखर कारखाने महाराष्ट्रात आहेत. ही सहकारी साखर कारखाने राज्याच्या आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व राजकिय विकासाची प्रतिके ठरलेली असल्याचे दिसून येते. कारण साखर कारखाने ज्या परिसरात स्थापन झाले त्या परिसरात पायाभूत सुविधा, रस्ते, शाळा, बाजारपेठांचा विस्तार होऊन त्या भागाचा विकास घडून आल्याचे दिसून येते त्याबरोबरच ग्रामीण भागातील अर्धवेकारीचा प्रश्न सुटण्यास मदत झाली. त्या भागातील अल्पभुद्धारक शेतकरी, शेतमजूर ऊसतोडणीचे काम करु लागले. नांदेड जिल्ह्याचा विचार केल्यास ज्या परिसरात साखर कारखाने स्थापन झाले त्या परिसरात ऊसतोडणी कामगारांची संख्या जारत असल्याचे दिसून येते.

आज मराठवाड्यात ५५ साखर कारखाने असून २३ साखर कारखाने कार्यरत आहेत. नांदेड जिल्ह्यात ७ सहकारी साखर कारखाने आहेत. नांदेड जिल्ह्यातील कंधार तालुक्यात इ.स. १९५० ते १९६० च्या दशकामध्ये मन्याड धरणाच्या निर्मितीमुळे ऊस लागवडीचे क्षेत्र वाढले होते. त्यामुळे कंधार तालुक्यातील कलंबर येथे सहकारी तत्वावर इ.स. १९६६ मध्ये कलंबर विभाग सहकारी साखर कारखाना श्री पद्मश्री श्यामराव कदम

यांनी स्थापन केला. नांदेड जिल्ह्यातील हा पहिला साखर कारखाना आहे. ऑगस्ट १९९२ मध्ये कंधार तालुक्याचे विभाजन करून त्यातून लोहा या नविन तालुक्याची निर्मिती केली. त्यामुळे हा कारखाना सध्या लोहा तालुक्यात येतो. इ.स. १९७७ मध्ये बिलोली तालुक्यात गोदावरी मनार सहकारी साखर कारखाना शंकरनगर ता.बिलोली जि.नांदेड येथे स्थापन केला. इ.स. १९८४ मध्ये शंकर सहकारी साखर कारखाना भोकर जि.नांदेड येथे स्थापन झाला. हा कारखाना आज शंकर सहकारी साखर कारखाना लि.कुसूमनगर वाघलवाडा ता.उमरी जि.नांदेड येथे आहे. इ.स. १९९० मध्ये हुतात्मा जयवंतराव पाटील सहकारी साखर कारखाना सुर्यनगर ता.हदगांव येथे स्थापन करण्यात आला. इ.स. १९९० मध्येच भाऊराव चव्हाण सहकारी साखर कारखाना येळेगांव जि.नांदेड येथे स्थापन करण्यात आला. इ.स. १९९९ मध्ये महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री कै.सुधाकरराव नाईक व कै.शंकरराव चव्हाण यांच्या प्रेरणेने जय शिवशंकर सहकारी साखर कारखाना शेषनगर मांजरी ता.मुखेड जि.नांदेड येथे स्थापन करण्यात आला. इ.स. १९ जय अंबिका सहकारी साखर कारखाना कुंटुर ता.नायगांव जि.नांदेड येथे स्थापन करण्यात आला.

नांदेड जिल्ह्यात ज्या परिसरात साखर कारखाने स्थापन झाले त्या परिसरात कामगारांना काम मिळाले. त्यातील अनेकांनी ऊसतोडणीचे काम स्विकारले. साखर कारखान्याच्या शेती खात्यार्मात ऊसतोडणीचे आदेशपत्र घेवून येणाऱ्या व्यक्तीने निर्देशित केलेल्या ऊस पिकाची तोडणी करून तो ऊस साळून, मोळ्या बांधून, त्या बैलगाडी, ट्रॅक्टर, ट्रक मध्ये भरून साखर कारखान्यामार्फत वाहतूक करण्याच्या कामात सहभागी होणाऱ्या कामगाराला ऊसतोडणी कामगार असे म्हणतात.

नांदेड जिल्ह्यातील हे ऊसतोडणी कामगार त्यांच्या परिसरातील कारखान्यावर स्वतः घरी राहून ऊसतोडणीचे काम करत होते. तेंव्हा बैलगाडीवान कामगार हे जास्त होते. त्या परिसरात काम करत असल्यामुळे त्यांच्या मुलांच्या शिक्षणाचा प्रश्न निर्माण झाला नव्हता. ज्या कामगारांकडे शेती होती हे कामगार आपल्या शेतीकडे लक्ष देऊन शेतातील कामे करत करत साखर कारखान्यात ऊसतोडणीचे काम करत होती. म्हणून कंधार, लोहा, मुखेड व नायगांव या तालुक्यात ऊसतोडणी कामगारांची संख्या जास्त असल्याचे दिसून येते.

साखर कारखान्याची कार्यक्षमता ही परिणामकारक व्यवस्थापनावर अवलंबून असते. आज दुर्दृष्टाने ग्रामीण समाजाचा विकास घडवून आणणारे साखर कारखाने आजारी पडली आहेत. बोटावर मोजण्याइतके सहकारी साखर कारखाने चालू असल्याचे दिसून येते. कारण सहकारी कारखाने राजकारणाचे अड्डे बनले आहेत. अयोग्य व्यवस्थापन, अतिरिक्त कर्मचारी, राजकिय हस्तक्षेप, पक्षीय राजकारणासाठी साखर कारखान्याचा वापर केल्या जात आहे हे चित्र नांदेड जिल्ह्यात पाहावयास मिळते याचा परिणाम नांदेड जिल्ह्यातील ७ सहकारी साखर कारखान्यांपैकी ५ कारखाने बंद पडली आहेत. त्यात कलंबर विभाग सहकारी साखर कारखाना ता.लोहा, जय अंबिका सहकारी साखर कारखाना कुटुंब ता.नायगांव, गोदावर मनार सहकारी साखर कारखाना शंकरनगर ता.बिलोली, जय शिवशंकर सहकारी साखर कारखाना शेषनगर मांजरी ता.मुखेड, हुतात्मा जयवंतराव पाटील सहकारी साखर कारखाना सुर्यनगर ता.हदगांव हे बंद पडले होते. परंतु हुतात्मा जयवंतराव पाटील सहकारी साखर कारखाना हा भाऊराव चव्हाण सहकारी साखर कारखान्याने चालू केला असून आज वरील ४ सहकारी साखर कारखाने बंद आहेत.

नांदेड जिल्ह्यातील काही ऊसतोडणी कामगारांना जिल्ह्या अंतर्गत चालू असलेल्या साखर कारखान्यांवर ऊसतोडणीचे काम करतात. तर बहुतांश ऊसतोडणी कामगार जिल्ह्याबाहेर प्रसंगी राज्याबाहेर ही ऊसतोडणीच्या कामासाठी रथलांतरीत होतांना दिसून येतात.

जिल्ह्यात ऊसतोडणी कामगारांची संख्या ५० ते ६० हजार आहे. ऊसतोडणी कामगारांची अधिकृतरित्या कुट्टेही नोंदणी केली जात नाही. सहकारी तत्वावरील साखर कारखाने असले तरी साखर कारखान्यांचा आणि ऊसतोडणी कामगारांचा संबंध नाही. ज्यांच्या जीवावर साखर कारखाने पूर्णतः अवलंबून आहेत तो घटक म्हणजे ऊसतोडणी कामगार मुकादमावर विश्वास ठेवून तो आपल्या कुटुंबासह ऊसतोडणीच्या कामाला जातो. हया ऊसतोडणी कामगारांना अनेक समर्थ्यांना तोंड दयावे लागत असल्याचे दिसून येते.

साखर उद्योगाच्या प्रक्रियेत साखर कारखाने, शेतकरी व शेतमजूर यांचा जवळचा संबंध आहे. कारण आजही साखर कारखान्यांकडे ऊसतोडणीसाठी कामगाराशिवाय पर्याय नाही म्हणून साखर उद्योगाच्या प्रक्रियेत ऊसतोडणी कामगारांची भूमिका अत्यंत महत्वाची आहे. म्हणून त्यांचा सहकारी साखर कारखान्यांशी प्रत्यक्ष संबंध निर्माण करणे अत्यंत महत्वाचे आहे.

संदर्भसूची :

- १) देशमुख रा.नी., आपला नांदेड जिल्हा, कल्पना प्रकाशन, नांदेड, २०१०
- २) मिश्र अनुराग (संपा.), साखरेचे अर्थकारण, योजना मासिक, २००६, प्रकाशन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा.
- ३) तुष्णे एस.डी. सहकारी कारखाने आणि ग्रामीण बदल, द्वारका प्रकाशन, मानतीरी पार्क, कोथरुड पुणे - २९, १९९२
- ४) प्रादेशिक सहसंचालक साखर कार्यालय, नांदेड प्राप्त माहिती सन २००६-२००७.
- ५) श्री गहनीनाथ ल.भोरे पाटील (अध्यक्ष) महाराष्ट्र राज्य ऊसतोडणी, वाहतूक व मुकादम कामगार युनियन, पाठर्डी जि.अहमदनगर.
- ६) प्रत्यक्ष मुलाखत अनुसूची २०१०-२०११.